



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 4824]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, दिसम्बर 6, 2018/अग्रहायण 15, 1940

No. 4824]

NEW DELHI, THURSDAY, DECEMBER 6, 2018/AGRAHAYANA 15, 1940

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

(केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 6 दिसम्बर, 2018

आय-कर

का.आ. 6053(अ).—केंद्रीय सरकार, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 115बछ की उपधारा (1) (जिसे इसमें इसके पश्चात् अधिनियम कहा गया है) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, अधिसूचित करती है कि,--

(i) जहां कोई विदेशी कंपनी, भारत में स्थित अपनी शाखा (जिसे इसमें इसके पश्चात् भारतीय शाखा कहा गया है) के माध्यम से भारत में बैंककारी कारबार में लगी हुई है और भारतीय शाखा को जैसा कि अधिनियम की धारा 115बछ की उपधारा (1) में निर्दिष्ट है उसकी समनुषंगी कंपनी (जिसे इसमें इसके पश्चात् भारतीय समनुषंगी कंपनी कहा गया है) में संपरिवर्तित करती है, अधिनियम की धारा 115बछ की उपधारा (1) के खंड (i) और खंड (ii) उपबंध ऐसे संपरिवर्तन पर लागू होंगे यदि निम्नलिखित शर्तें पूरी होती हैं अर्थात्:--

(क) भारतीय शाखा भारतीय समनुषंगी कंपनी में विदेशी कंपनी के शेयरधारकों और भारतीय समनुषंगी कंपनी द्वारा अनुमोदित समामेलन की स्कीम के अनुसार समामेलित होती है और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक प्रेस प्रकाशनी संख्या 2013-2014/936 तारीख छह नवंबर, 2013 द्वारा जारी भारत में विदेशी बैंकों द्वारा संपूर्ण स्वामित्व वाली सहायक बैंक स्थापित करने के लिए रूपरेखा के पैरा 20(ज) के अधीन संस्तुत हो;

(ख) संपरिवर्तन के ठीक पहले भारतीय शाखा की सभी आस्तियां और दायित्व भारतीय समनुषंगी कंपनी की आस्तियां और दायित्व होंगी;

(ग) भारतीय समनुषंगी कंपनी को भारतीय शाखा की आस्तियां और दायित्व इसके संपरिवर्तन के ठीक पहले लेखाबही में दर्शित हो रहे मूल्यों पर अंतरित हैं;

स्पष्टीकरण: इस खंड के प्रयोजनों के लिए आस्तियों के मूल्य के निर्धारण के लिए उसके पुर्नमूल्यांकन के परिणामस्वरूप आस्तियों के मूल्य में किसी परिवर्तन को छोड़ दिया जाएगा;

(घ) अधिनियम की धारा 115जद्ध की उपधारा (1) में निर्दिष्ट विदेशी बैंक या इसकी नाम निर्देशिती संपरिवर्तन की तारीख से प्रारंभ होने वाली और जिस वर्ष में संपरिवर्तन हुआ उससे पूर्वतन वर्ष की अंतिम तारीख के दौरान भारतीय समनुषंगी कंपनी की संपूर्ण शेयर पूँजी धारण करेगी और भारतीय समनुषंगी कंपनी के ऐसे शेयर जो इक्यावन प्रतिशत से अन्यून मतदान शक्ति वाले हैं को उक्त पूर्वतन वर्ष के ठीक उत्तरवर्ती पांच वर्ष की अवधि के लिए धारण करना जारी रखेगी;

(इ) अधिनियम की धारा 115जद्ध की उपधारा (1) में निर्दिष्ट विदेशी कंपनी, भारतीय समनुषंगी कंपनी में शेयरों के आवंटन के रूप के सिवाय कोई प्रतिफल या फायदा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष या अन्य किसी रूप या रीति से प्राप्त नहीं करती है;

(ii) अधिनियम की धारा 115जद्ध की उपधारा (1) में निर्दिष्ट विदेशी कंपनी और भारतीय समनुषंगी कंपनी की दशा में, किंतु कंपनियों से संबंधित समझी गई आय पर संदर्भ कर की बाबत अनामेलित अवक्षयण, मुजरे या हानियों के अग्रनयन और मुजरे, कर प्रत्यय और आय की संगणना से संबंधित इस अधिनियम के उपबंध निम्नलिखित अपवादों, उपांतरणों और अनुमूलनों के साथ लागू होंगे,--

(क) अधिनियम की धारा 32 के अधीन अवक्षयण की अनुमति के उद्देश्यों के लिए भारतीय शाखा और भारतीय समनुषंगी कंपनी को अनुज्ञेय भवन, मशीनरी, संयंत्र या फर्नीचर जो मूर्त आस्ति है या व्यवहार ज्ञान, पेटेट या कार्पीराइट, व्यापार चिन्ह, लाइसेंस, फ्रैंचाइज या उसी प्रकार का कोई अन्य कारबार या वाणज्यिक अधिकार जो अमूर्त आस्तियां हैं के अवक्षयण की बाबत कुल कटौती किसी पूर्व वर्ष में विहित दरों पर परिकलित कटौती से अधिक नहीं होगी मानो संपरिवर्तन हुआ ही न हो और ऐसी कटौती भारतीय शाखा और भारतीय समनुषंगी कंपनी के बीच ऐसे दिनों की संख्या के अनुपात में प्रभाजित की जाएगी जिनके लिए ऐसी आस्तियों का उनके द्वारा उपयोग किया गया था;

(ख) भारतीय शाखा की संचित हानि और शेष अवक्षयण उस पूर्व वर्ष के लिए जिसमें संपरिवर्तन प्रभावी हुआ है, भारतीय समनुषंगी कंपनी के अवक्षयण के लिए हानि या मोक समझा जाएगा और अवक्षयण के लिए हानि और मोक का मुजरा करने और इसे अग्रनीति करने से संबंधित इस अधिनियम के उपबंध तदनुसार लागू होंगे।

स्पष्टीकरण.- इस खंड के प्रयोजनों के लिए,-

(I) "संचयित हानि" से भारतीय शाखा की भारतीय समनुषंगी कंपनी में इसके संपरिवर्तन से पूर्व "कारबार या वृत्ति के लाभ और अभिलाभ" शीर्ष के अधीन उतनी हानि अभिप्रेत है (जो सटेवाजी के कारबार से हुई हानि न हो) जिसके लिए ऐसी भारतीय शाखा धारा 72 के उपबंधों के अधीन अग्रनयन और मुजरा करने के लिए हकदार होती यदि संपरिवर्तन न हुआ होता;

(II) "शेष अवक्षयण" से भारतीय शाखा का भारतीय समनुषंगी कंपनी में इसके संपरिवर्तन से पूर्व उतना अवक्षयण मोक अभिप्रेत है जो ऐसी शाखा को अनुज्ञात किए जाने के लिए शेष है और जो अनुज्ञात किया गया होता, यदि संपरिवर्तन न हुआ होता;

(ग) धारा 43 के खंड (1) के प्रयोजनों के लिए भारतीय समनुषंगी कंपनी की दशा में आस्ति समूह की वास्तविक लागत भारतीय शाखा की स्थिति में इसके भारतीय समनुषंगी कंपनी में संपरिवर्तन की तारीख को आस्ति समूह का अवलिखित मूल्य होगी;

(घ) किसी पूँजी आस्ति की वास्तविक लागत जिस पर कटौती अधिनियम की धारा 35कघ के अधीन अनुज्ञात की गई है या अनुज्ञेय है, भारतीय समनुषंगी कंपनी की दशा में अधिनियम की धारा 43 के खंड (1) के प्रयोजनों के लिए शून्य मानी जाएगी यदि पूँजी आस्ति भारतीय शाखा के संपरिवर्तन के परिणाम स्वरूप भारतीय समनुषंगी कंपनी की संपत्ति हो गई है;

(इ) जहां भारतीय शाखा के संपरिवर्तन के परिणाम स्वरूप उपखंड (ग) और उपखंड (घ) में निर्दिष्ट के अलावा पूँजी आस्ति भारतीय समनुषंगी कंपनी की संपत्ति हो गई है, वहां पूँजीगत लाभ की संगणना के प्रयोजनों के लिए आस्ति के अर्जन की

लागत वह लागत समझी जाएगी जिसके लिए यथास्थिति भारतीय शाखा ने इसे अर्जित किया है या पूर्वतन स्वामी ने इसे अर्जित किया है।

स्पष्टीकरण: इस खंड के प्रयोजनों के लिए भारतीय समनुषंगी कंपनी के स्वामित्वाधीन किसी पूँजी आस्ति के संबंध में 'पूर्वतन स्वामी' से पूँजी आस्ति का वह अंतिम पूर्वतन स्वामी अभिग्रेत है जिसने उसका अर्जन अधिनियम की धारा 39 की उपधारा (1) के खंड (i) या खंड (ii) या खंड (iii) या खंड (iv) या धारा 115जछ में निर्दिष्ट अर्जन के ढंग से भिन्न ढंग से किया है;

(च) पूर्वतन वर्ष के प्रयोजनों के लिए जिसमें संपरिवर्तन प्रभावी हुआ है भारतीय शाखा की कर क्रेडिट भारतीय समनुषंगी कंपनी की कर क्रेडिट समझी जाएगी और अधिनियम की धारा 115जक के उपबंध तदनुसार लागू होंगे।

स्पष्टीकरण: इस खंड के प्रयोजनों के लिए 'कर क्रेडिट से अभिग्रेत है भारतीय शाखा के भारतीय समनुषंगी कंपनी में संपरिवर्तन से पहले उतना कर क्रेडिट, जितना संपरिवर्तन नहीं हुआ होता तो भारतीय शाखा अधिनियम की धारा 115जक के उपबंधों के अनुसार अग्रनीत और मुजरा करने का हकदार होती;

(छ) अधिनियम की धारा 35घबक के उपबंध भारतीय समनुषंगी कंपनी पर यथाशक्य वैसे ही लागू होंगे जैसे यदि संपरिवर्तन नहीं हुआ होता तो वे भारतीय शाखा पर लागू होते।

(ज) संपरिवर्तन की तारीख को अधिनियम की धारा 36 की उपधारा (1) के उपखंड (viiक) के अधीन ढूबंत और शंकास्पद ऋणों के लिए की गई व्यवस्था में जमा अतिशेष, भारतीय समनुषंगी कंपनी की जमा अतिशेष समझी जाएगी और अधिनियम की धारा 36 के उपबंध तदनुसार लागू होंगे;

(झ) भारतीय शाखा के भारतीय समनुषंगी कंपनी में संपरिवर्तन के परिणामस्वरूप धारा 115जछ की उपधारा (1) में निर्दिष्ट विदेशी कंपनी या इसके नामनिर्देशती द्वारा भारतीय समनुषंगी कंपनी में शेयरों की प्राप्ति के संव्यवहार को अधिनियम की धारा 56 की उपधारा (2) के खंड (x) के उपबंध लागू नहीं होंगे;

स्पष्टीकरण: इस अधिसूचना के प्रयोजनों के लिए "संपरिवर्तन की तारीख" वह होगी, जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक प्रेस प्रकाशनी संख्या 2013-2014/936 तारीख, छह नवंबर, 2013 द्वारा जारी भारत में विदेशी बैंकों द्वारा संपूर्ण स्वामित्व वाली सहायक बैंक स्थापित करने के लिए रूपरेखा के पैरा 20(झ) के अधीन भारतीय शाखा के उपक्रम के हितों को भारतीय समनुषंगी कंपनी में निहित करना तय करे।

【अधिसूचना सं. 85/2018/ फा.सं.370133/34/2016-टीपीएल】

प्रवीण रावल, निदेशक (कर नीति और विधान)

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Revenue)
(CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES)
NOTIFICATION
New Delhi, the 6th December, 2018
INCOME-TAX

S.O. 6053(E).— In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 115JG of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961)(hereinafter referred to as the Act), the Central Government hereby notifies that,—

- (i) where a foreign company engaged in the business of banking in India through its branch situate in India (hereinafter referred to as the Indian Branch) converts Indian branch into its subsidiary company (hereinafter referred to as the Indian subsidiary company) as referred to in sub-section (1) of section 115JG of the Act, the provisions of clause (i) and clause (ii) of sub-section (1) of

section 115JG of the Act shall be applicable to such conversion, if following conditions are fulfilled, namely:—

- (a) the Indian branch amalgamates with the Indian subsidiary company in accordance with the scheme of amalgamation approved by the shareholders of the foreign company and the Indian subsidiary company and sanctioned by the Reserve Bank of India under paragraph 20(h) of the Framework for setting up of wholly owned subsidiaries by foreign banks in India issued by the Reserve Bank of India *vide* press release number 2013-2014/936 dated 6th day of November, 2013;
- (b) all the assets and liabilities of the Indian branch immediately before conversion shall become the assets and liabilities of the Indian subsidiary company;
- (c) the asset and liabilities of the Indian branch are transferred to the Indian subsidiary company at values appearing in the books of account of the Indian branch immediately before its conversion.

Explanation.— For determining the value of the assets for the purposes of this clause, any change in the value of assets consequent to their revaluation shall be ignored;

- (d) the foreign bank referred to in sub-section (1) of section 115JG of the Act or its nominee shall hold the whole of the share capital of the Indian subsidiary company during the period beginning from the date of conversion and ending on the last day of the previous year in which the conversion took place and continue to hold the share of Indian subsidiary company carrying not less than fifty-one per cent. of the voting power for a period of five years immediately succeeding the said previous year;
- (e) the foreign company referred to in sub-section (1) of section 115JG of the Act does not receive any consideration or benefit, directly or indirectly, in any form or manner, other than by way of allotment of shares in the Indian subsidiary company;

(ii) the provision of the Act relating to unabsorbed depreciation, set off or carry forward and set off of losses, tax credit in respect of tax paid on deemed income relating to certain companies and the computation of income in the case of foreign company referred to in sub-section (1) of section 115JG of the Act and the Indian subsidiary company shall apply with the following exceptions, modifications and adaptation,—

- (a) for the purposes of allowance of depreciation under section 32 of the Act, the aggregate deduction, in respect of depreciation of buildings, machinery, plant or furniture, being tangible assets or know-how, patents, copyrights, trademarks, licences, franchises or any other business or commercial rights of similar nature, being intangible assets allowable to the Indian branch and the Indian subsidiary company shall not exceed in any previous year the deduction calculated at the prescribed rates as if the conversion had not taken place, and such deduction shall be apportioned between the Indian branch and the Indian subsidiary company in the ratio of the number of days for which the assets were used by them;
- (b) the accumulated loss and the unabsorbed depreciation of the Indian branch, shall be deemed to be the loss or allowance for depreciation of the Indian subsidiary company for the previous year in which conversion was effected and provisions of the Act relating to set off and carry forward of loss and allowance for depreciation shall apply accordingly.

Explanation.- For the purposes of this clause,-

(I) “accumulated loss” means so much of the loss of the Indian branch before its conversion into the Indian subsidiary company under the head “Profits and gains of business or profession” (not being a loss sustained in a speculation business) which such Indian branch would have been entitled to carry forward and set off under the provisions of section 72 of the Act if the conversion had not taken place;

(II) “unabsorbed depreciation” means so much of the allowance for depreciation of the Indian branch before its conversion into the Indian subsidiary company, which remains to be allowed and which would have been allowed to the Indian branch under the provisions of the Act, if the conversion had not taken place;

(c) for the purposes of clause (1) of section 43, the actual cost of the block of assets in the case of the Indian subsidiary company shall be the written down value of the block of assets as in the case of the Indian branch on the date of its conversion into the Indian subsidiary company;

(d) the actual cost of any capital asset on which deduction has been allowed or is allowable under section 35AD of the Act , shall be treated as 'nil' for the purposes of clause (1) of section 43 of the Act in the case of the Indian subsidiary company if the capital asset became the property of the Indian subsidiary company as a result of conversion of the Indian branch;

(e) where the capital asset other than those referred to in sub-clause(c) and sub-clause (d) became the property of the Indian subsidiary company as a result of conversion of the Indian branch, the cost of acquisition of the asset for the purposes of computation of capital gains shall be deemed to be the cost for which the Indian branch acquired it or, as the case may be, the cost for which previous owner has acquired it.

Explanation.— For the purposes of this clause, the expression ‘previous owner’ in relation to any capital asset owned by the Indian subsidiary company means the last previous owner of the capital asset who acquired it by a mode of acquisition other than those referred to in clause (i) or clause (ii) or clause (iii) or clause (iv) of sub-section (1) of section 49 or sub-section (1) of section 115JG of the Act;

(f) the tax credit of the Indian branch shall be deemed to be the tax credit of the Indian subsidiary company for the purpose of the previous year in which conversion was effected and the provisions of section 115JAA of the Act shall apply accordingly.

Explanation.— For the purposes of this clause ‘tax credit’ means so much of the tax credit of the Indian branch before conversion into Indian subsidiary company which such Indian branch would have been entitled to carry forward and set off under the provisions of section 115JAA of the Act, if the conversion had not taken place;

(g) the provisions of 35DDA of the Act shall be, as far as may be, apply to the Indian subsidiary company, as they would have applied to the Indian branch, if the conversion had not taken place;

(h) the credit balance in the provision for bad and doubtful debts account made under clause (viiia) of sub-section (1) of section 36 of the Act of the Indian Branch on the date of conversion shall be deemed to be the credit balance of the Indian subsidiary company and the provisions of section 36 of the Act shall apply accordingly;

- (i) the provisions of clause (x) of sub-section (2) of section 56 of the Act shall not apply to the transaction of receipt of shares in the Indian subsidiary company by the foreign company referred to in sub-section (1) of section 115JG or its nominee in consequence of the conversion of the Indian branch into the Indian subsidiary company.

Explanation.— For the purposes of this notification “date of conversion” shall be the date which the Reserve Bank of India appoints for the vesting of undertaking of the Indian branch in Indian subsidiary company under paragraph 20(i) of the Framework for setting up of wholly owned subsidiaries by foreign banks in India issued by the Reserve Bank of India *vide* press release number 2013-2014/936 dated 6th day of November, 2013.

[Notification No.85/2018/F.No.370133/34/2016-TPL]

PRAVIN RAWAL, Director (Tax Policy & Legislation)